

## सऊदी अरब-ईरान संबंध

### प्रलमिस के लयि:

यमन में हौथी वदिरोही, इज़रायल-फलिसतीन वविाद, मध्य पूरवी देशों की भौगोलकि स्थति, पश्चमि एशया।

### मेन्स के लयि:

सऊदी-ईरान संबंधों में भारत की भूमकि, भारत के हतिों पर अन्य देशों की नीतयिों और राजनीतकि परभाव।

## चरचा में कयों?

हाल ही में सऊदी अरब ने आतंकवाद एवं 'कैपटिल क्राइम' (ऐसे अपराध जनिके लयि मृतयुदंड का प्रावधान है) के आरोपी सात यमनयिों और एक सीरयाई नागरकि सहति 81 लोगों को सामूहकि रूप से फौसी दी है। इसके कारण ईरान सरकार ने सऊदी अरब के साथ वार्ता स्थगति कर दी है।

- दोनों देशों के बीच लंबे समय से तनावपूरण राजनयकि संबंध रहे हैं।
- क्षेत्रीय परतदिवंदवयिों ईरान और सऊदी अरब, जनिहोंने वर्ष 2016 में राजनयकि संबंधों को समाप्त कर दया था, ने यमन में युद्ध को समाप्त करने हेतु संयुक्त राष्ट्र के नेतृत्व वाले परयासों के रूप में वर्ष 2021 में इराक द्वारा आयोजति सीधी वार्ता शुरू की। इराक में दोनों के बीच चार दौर की बातचीत हो चुकी है।



## वगित वर्षों के प्रश्न

प्र. दक्षणि-पश्चमी एशया का नमिनलखिति में से कौन-सा एक देश भूमध्यसागर तक नहीं फैला है?

- (a) सीरिया
- (b) जॉर्डन
- (c) लेबनान
- (d) इजरायल

उत्तर: (b)

## सऊदी-अरब ईरान संघर्ष की पृष्ठभूमि:

- **धार्मिक गुटबाज़ी:** इन दोनों के बीच दशकों पुराना झगड़ा धार्मिक मतभेदों के कारण और गहरा गया है। इनमें से प्रत्येक देश इस्लाम की दो मुख्य शाखाओं में से एक का पालन करता है।
  - ईरान में बड़े पैमाने पर शिया मुस्लिम हैं, जबकि सऊदी अरब स्वयं को प्रमुख सुन्नी मुस्लिम शक्ति के रूप में देखता है।
- **इस्लामिक दुनिया का नेतृत्वकर्ता:** ऐतिहासिक रूप से सऊदी अरब राजशाही और इस्लाम धर्म का जन्मस्थान है जो स्वयं को मुस्लिम-वशिव का नेतृत्वकर्ता समझता था।
  - हालाँकि इसे वर्ष 1979 में ईरान में इस्लामी क्रांतिद्वारा चुनौती दी गई थी, जिसने इस क्षेत्र में एक नए प्रकार के राज्य का निर्माण किया- एक तरह का क्रांतिकारी धर्मतंत्र, जिसका इस मॉडल को अपनी सीमाओं से परे नरियात करने का एक स्पष्ट लक्ष्य था।
- **क्षेत्रीय शीत युद्ध:** सऊदी अरब और ईरान दो शक्तिशाली पड़ोसी हैं जो क्षेत्रीय प्रभुत्व के लिये संघर्षरत हैं।
  - इस वद्विरोह ने अरब क्षेत्र के अतिरिक्त दुनिया भर में (2011 में [अरब स्प्रिंग](#) के बाद) राजनीतिक अस्थिरता पैदा कर दी।
  - ईरान और सऊदी अरब ने अपने प्रभाव का वसतिार करने के लिये इस उथल-पुथल का फायदा उठाया, विशेष रूप से सीरिया, बहरीन और यमन में आपसी संदेह को और बढ़ावा दिया।
  - इसके अलावा सऊदी अरब और ईरान के बीच संघर्ष को बढ़ाने में अमेरिका और इजरायल जैसी बाहरी शक्तियों की प्रमुख भूमिका है।
- **छद्म युद्ध (Proxy War):** प्रत्यक्ष रूप से ईरान और सऊदी अरब इस युद्ध को नहीं लड़ रहे हैं, लेकिन वे इस क्षेत्र के आसपास कई छद्म युद्धों (ऐसा संघर्ष जहाँ वे प्रतदिवंद्वी पक्षों और रक्षक योद्धाओं का समर्थन करते हैं) में शामिल रहे हैं।
  - उदाहरण के लिये [यमन में हूती वद्विरोही](#)। ये समूह अधिक क्षमता प्राप्त करने के साथ इस क्षेत्र में और अस्थिरता पैदा कर सकते हैं। सऊदी अरब द्वारा ईरान पर उनका समर्थन करने का आरोप लगाया जाता है।
- **प्रदर्शनकारियों द्वारा वद्विरोह 2016:** सऊदी अरब द्वारा शिया मुस्लिम धर्मगुरु शेख नमिर अल-नमिर (Nimr al-Nimr) को फाँसी दिये जाने के बाद कई ईरानी प्रदर्शनकारियों ने ईरान में सऊदी राजनयिक मिशनों पर हमला किया।

## संबंधों के सामान्यीकरण का संभावित प्रभाव:

- **इजरायल-फिलिस्तीन संघर्ष का समाधान:** ईरान और सऊदी अरब के बीच संबंधों में सुधार होने से [इजरायल और फिलिस्तीनी मुद्दे](#) से निपटने में सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।
- **तेल बाज़ार का स्थिरीकरण:** ईरान और सऊदी अरब साझा हित में अपनी अर्थव्यवस्थाओं के लिये बाज़ार के महत्त्व को देखते हुए तेल की स्थिरी कीमतों को साझा करते हैं।
  - संबंधों के सामान्यीकरण से सभी तेल उत्पादक देशों हेतु स्थिरी राजस्व के साथ-साथ सऊदी अरब एवं ईरान दोनों के आर्थिक योजनाकारों के लिये अधिक पूर्वानुमान सुनिश्चिती होगा।

## वर्षों के प्रश्न

नमिनलखिति में से कौन-सा खाड़ी सहयोग परिषद (गल्फ कोऑपरेशन काउंसिल) का सदस्य नहीं है? (2016)

- (a) ईरान
- (b) सऊदी अरब
- (c) ओमान
- (d) कुवैत

उत्तर: (a)

## आगे की राह

- **भारत की भूमिका:** ऐतिहासिक रूप से दोनों देशों के साथ भारत के अच्छे राजनयिक संबंध हैं। दोनों देशों के बीच संबंधों के स्थिरी होने से भारत पर इसका मशिर्ति प्रभाव पड़ेगा।
  - नकारात्मक पक्ष के रूप में तेल की ऊँची कीमतें भारत में व्यापार संतुलन को प्रभावित करेंगी।
  - इसके सकारात्मक पक्ष के रूप में यह पूरे क्षेत्र में नविश, कनेक्टविटी परियोजनाओं को आसान बना सकता है।
- **ईरान से पारस्परिकता:** ईरान को यमन में संघर्ष वरिाम का सार्वजनिक रूप से समर्थन करके अपने राजनयिक प्रयासों की छाप छोड़ने की आवश्यकता है।
- **अमेरिकी प्रतबिंधों में ढील:** यदि ईरान-सऊदी अरब संबंधों को सामान्य बनाना है, तो [ईरान पर अमेरिकी प्रतबिंधों को लेकर स्पष्टता](#) सबसे महत्त्वपूर्ण है।

## वर्षों के प्रश्न

प्र. भारत द्वारा चाबहार बंदरगाह विकसित करने का क्या महत्त्व है? (2017)

- (a) अफ्रीकी देशों के साथ भारत के व्यापार में अपार वृद्धि होगी।
- (b) तेल-उत्पादक अरब देशों से भारत के संबंध सुदृढ़ होंगे।
- (c) अफगानिस्तान और मध्य एशिया में पहुँच के लिये भारत को पाकिस्तान पर निर्भर नहीं होना पड़ेगा।
- (d) पाकिस्तान, इराक और भारत के बीच गैस पाइपलाइन का संस्थापन सुकर बनाएगा और उसकी सुरक्षा करेगा।

उत्तर: (c)

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/saudi-arabia-iran-relations>

